L.N. MITHILA UNIVERITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- III
PSYCHOLOGY (HONOURS)
B.A PAPER- VI
TOPIC- PREVENTION OF ACCIDENT.

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assit. Professor,
Guest. Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
Madhubani (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com.

दुर्घटना के भयंकर दुष्प्रभावों पर ध्यान देने से स्वभावतः इसकी रोकथाम की समस्या पर भी विचार करना प्रासंगिक लगता है। अतः जिन कारणों से दुर्घटनाएं होती हैं। यदि उनकी रोकथाम की जाए तो औद्योगिक दुर्घटना काफी हद तक कम हो सकती है। अतः यहाँ पर हम औद्योगिक दुर्घटना के निवारण के लिए कुछ मिले-जुले मनोवैज्ञानिक उपायों का वर्णन कर रहे हैं।

(1) काम की परिस्थिति भौतिक अवस्थाओं की व्यवस्था दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए वायुमंडलीय अवस्थाओं में सुधार करना आवश्यक है, क्योंकि अनुचित तापमान, आर्द्रता तथा अपर्याप्त वायु-संचार से दुर्घटनाओं की बारम्बारता बढ़ जाती है। कर्मचारियों को दुर्घटनाओं से मुक्त करने के लिए सामान्य तापमान को बनाए रखना आवश्यक है। वायु-संचार के लिए वातायनों का पर्याप्त प्रबंध होना आवश्यक है। विभिन्न प्रकार के पंखों का भी प्रयोग करके वायु-संचार की समस्या कुछ हद तक दूर की जा सकती है। जिस तापमान पर उत्पादन या कार्य विशेष में वृद्धि हो उसके लिए वही तापमान आदर्श है। दुर्घटनाएं अधिकतर रात में ही होती हैं। इसलिए कर्मचारियों से दिन में ही काम लेना उचित है।
इसके अलावा काम के घंटों में कमी करके भी दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। Solfmark ने अपने अध्ययन में देखा कि 8 घंटों की अपेक्षा 10 घंटों की अवधि में दुर्घटनाएं लगभग दुगुनी अधिक होती हैं। इसलिए निश्चित कार्य के घंटों की व्यवस्था करके दुर्घटनाएं रोकी जा सकती हैं।
इसके अलावा शोरगुल में कमी करके भी कुछ

दुर्घटनाओं की निरंतर निगरानी की जा सकती है। क्योंकि अनावश्यक मौजूदा पर ही नियंत्रण करके दुर्घटनाओं में कमी लायी जा सकती है।

(2) प्रकाश तथा एकरसता का समुचित निराकरण :-

दुर्घटना का संबंध प्रकाश तथा एकरसता आदि से अधिक होता है। अतः इसके समुचित निराकरण से कुछ दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है। पर्याप्त प्रकाश कम करने के लिए वांछित समय पर पर्याप्त विश्राम देना आवश्यक है। प्रकाश की तरह एकरसता (नीरसता) भी एक प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक दशा है। जो सुस्ती, दोहराए जाने वाले कार्यों के फलस्वरूप उत्पन्न होती है, अतः एकरसता दूर करने के लिए काम में परिवर्तन करके आकर्षक पारिश्रमिक लागू कर, समुचित व्यावसायिक व्यवस्था कर इसको दूर किया जा सकता है। ऐसा होने से दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है।

(3) सुरक्षित मशीन प्रारूप की व्यवस्था :-

औद्योगिक क्षेत्रों में काम आने वाले यंत्रों की संरचना पर ध्यान रखना आवश्यक है। क्योंकि ये यंत्र ही औद्योगिक दुर्घटना में प्रमुख रूप से सहायक होते हैं यंत्रों ही औद्योगिक दुर्घटना में प्रमुख रूप से सहायक होते हैं। यंत्रों की निर्माण इस प्रकार होनी चाहिए, कि उनके चालक किसी प्रकार की दुर्घटना से आक्रान्त न हों, जिससे यंत्रों को व्यवहार में लाने के पहले उसकी अच्छी तरह निरीक्षण करना आवश्यक है। इस प्रकार सुरक्षित मशीन-प्रारूप की व्यवस्था से दुर्घटना से रोका जा सकता है।

(4) समुचित प्रशिक्षण तथा सुरक्षा शिक्षा :-

कार्मिकों को समुचित प्रशिक्षण देकर तथा सुरक्षा संबंधी जानकारी प्रदान कर उन्हें दुर्घटनाओं से मुक्त कराया जा सकता है। यह प्रशिक्षण कर्मचारी और पर्यवेक्षक दोनों के लिए आवश्यक है। इसके अलावा सुरक्षा नियमों की जानकारी देना भी आवश्यक है। सुरक्षा प्रशिक्षण देने के लिए सबसे प्रभावी माध्यम स्वतः पर्यवेक्षक है

Scanned with CamScanner

(5) सुरक्षा उपाय तथा सुरक्षा प्रशिक्षण :- इस उद्योग में सुरक्षा के संबंध पर विभिन्न प्रकार की उपायें आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसे नियम होने चाहिए जिससे मानव शरीर का हिस्सा सुरक्षित तरह बचाया हो और वातावरण दूषण कम हो और सावधान की अपील का संकेत हो कि कोई व्यक्ति साथ का स्पर्श न हो जाए पोस्टर इसकी उचित जगह पर लगाना चाहिए साथ ही साथ दुर्घटनाओं से संबंधित विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं का भी प्रकाशन होना चाहिए। इस प्रकार इन सब उपायों से दुर्घटना का अवसर ही कुछ अवरुद्ध होगा।

(6) कार्य की सही गति :- औद्योगिक क्षेत्रों में घटित दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण कार्य की गति का है। अधिक उत्पादन या कम समय में उत्पादन के लिये प्रायः औद्योगिक संस्थानों में मशीनों की गति सामान्य से अधिक रखी जाती है। कार्य मशीनों पर किया जाए, अथवा केवल हाथों के माध्यम से उसकी गति सामान्य ही रखी जानी चाहिए। क्योंकि हाथों, पैरों, नेत्रादि के तीव्र संचालन में थकावट, बेचैनी अवसाद आदि की अनेक समस्याएं होती हैं और इनसे किसी भी प्रकार की भूल हो सकती है क्योंकि व्यक्ति किसी भी दशा में मशीन के समान कार्य नहीं कर सकता, उसकी बुद्धि या अंग-संचालन की गतिशीलता निर्धारित नहीं किया जा सकता

(7) पर्याप्त सुरक्षात्मक सावधानी - सावधानी रखकर दुर्घटनाओं की संख्या में न्यूनता तो लाई जा सकती है परन्तु सदैव के लिए दुर्घटनाओं के घटित होने की संभावनाओं को नहीं रोका जा सकती। अतः सुरक्षा के तथा संबंध उपाय आवश्यक है। ऐसी कहावत है कि आग लगने पर कुआं खोदने का प्रयास व्यर्थ हम करते हैं अतः किसी भी आकस्मिक दुर्घटना से पूर्व ही अग्नि-शमन उपकरण, बालू रेत आदि की व्यवस्था कर लेनी चाहिए एवं सुरक्षा कर्मियों को सदैव सचेत रहना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(iii)

प्रभावात्मक पोस्टर — विभिन्न प्रकार के निषेधात्मक पोस्टर
चाहे अथवा विवेक पद्धतियों के माध्यम से दुर्घटना होने
रखने वाले सावधानियों की जानकारी दी जा
सकती है। इससे श्रमिक सदैव सचेत व सजग रहकर
सावधान रहता है। और दुर्घटनाओं को आमन्त्रित
करने वाली अनेक त्रुटियों में अपेक्षाकृत कम होती है।
वर्तमान समय की नई-विकसित दुर्घटना रोकथामों
की प्रणाली और दुर्घटनाओं को कम करने वाली नवीन
तकनीकों पर आधारित मशीनों का उपयोग भी
अत्यन्त ही हितकर है।
वस्तुतः दुर्घटनाओं के प्रति सावधानी विधि का
उद्योग की निरन्तर गतिशीलता के लिये आवश्यक
आवश्यक है। क्योंकि इसकी श्रमिकों, पूंजीपतियों
और उत्पादन पर कम-ज्यादा सभी तरह द्वारा चाहे
प्रभाव पड़ता है। अतः यह कहा जा सकता है कि समग्र
प्रभावों को कम कर देती है। उदाहरण के रूप में
बीड़ी तथा सिगरेट का एक पीना विधि का
उद्योग को एक भाग भी लापरवाह करने के लिए
पर्याप्त है। अतः उपचारात्मक उपायों की
अनुसरण करते हुए दुर्घटनाओं के कारणों के
प्रति श्रमिक को सजग रहना परम
आवश्यक है।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 24/07/2020